"सुनामी"

प्रभाष कुमार मिश्र
रा.ज.सं., रूड़की

सुबह एक दिन "26 दिसंबर"
चल पड़े दोनों साथ समुंदर और संग
निर्मल किरन हवा मंथर।।

गुमशुम धरती मगर सीने में दर्द की लहर
खामोश, बेजुबां आखिर कब तक झेले इंसानी जहर
बहुत सोची कैसे निकाले सीने का कहर।।

तब सूझी एक तरकीब!

उठाई शस्त्र "सुनामी"! सजी–धजी, थोड़ी थर्राई!
अशांत लहरों की कड़ी,
ले चली संग सब कुछ मचा दी बेकरारी।।

बसने से पहले उजाड़ी दुनिया मेरी
बस छोड़ गई एन कतारों में पानी

बैठता हूं तन्हा देर तक, थक गया हूं तलाशते,
एक नई सुबह के लिए!
शायद वो फिर से आएगी,
इन लहर कातिलों से–इन लहर कातिलों से ।।

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।

– लोकमान्य तिलक